हिंदी संत साहित्य : विश्लेषणात्मक परिचय

डॉ. प्रदीप कुमार*

वी. पी. ओ. नारनौंद, जिला हिसार, हरियाणा, भारत

***Email ID**: lohanpardeep2@gmail.com*

Accepted: 24.03.2023 **Published**: 01.04.2023

मुख्य शब्दः हिंदी संत साहित्य।

शोध आलेख सार

हिंदी संत साहित्य हिंदी साहित्य का एक बहुत ही खास हिस्सा है जिसे सर्वश्रेष्ठ में से एक माना जाता है। इसकी अपनी एक अलग पहचान है और इसे कई लोग जानते हैं। इन संत कवियों द्वारा लिखा गया साहित्य अत्यंत आध्यात्मिक है, क्योंकि इनका ध्यान आत्मा और परमात्मा को समझने पर केंद्रित है। उन्होंने अलग–अलग स्थानों पर साधना करके इसे हासिल किया। संत साहित्य इसलिए अलग है क्योंकि यह सरल और प्राकृतिक है और इसमें लोक संस्कृति की भी झलक मिलती है। इससे पहले कि हम इस साहित्य को पूरी तरह से समझ सकें, हमें यह जानना होगा कि संत शब्द का अर्थ क्या है।

पहचान निशान

**Corresponding Author*

© IJRTS Takshila Foundation, डॉ. प्रदीप कुमार, All Rights Reserved.

संतः व्युत्पत्तिगत एवं व्यवहारगत अर्थ

भारत में आध्यात्मिक और अच्छे लोगों के बारे में बात करने के लिए संत शब्द का प्रयोग बहुत लंबे समय से किया जाता रहा है। इसका मतलब एक दयालु व्यक्ति, एक भिक्षु, या कोई ऐसा व्यक्ति हो सकता है जिसने सांसारिक चीजों को त्याग दिया है। कुछ लोग तो यह भी सोचते हैं कि संत भगवान के समान होते हैं। इसलिए, जब वे संत शब्द का उपयोग करते हैं, तो इसका मूल अर्थ वही होता है।

संत शब्द संस्कृत के सत शब्द से आया है, जिसका अर्थ है होना या सत्य। संत शब्द सत का बहुवचन है और इसका अर्थ है जिसने सत्य को प्राप्त कर लिया हैश। एक अन्य व्याख्या यह है कि श्संतश पाली शब्द

से आया है जिसका अर्थ है शांत या वैरागी। हिंदी में, संत का प्रयोग एकवचन शब्द के रूप में किया जा सकता है जिसका अर्थ है श्वह जो एकमात्र सत्य में विश्वास करता है या जिसने इसे पूरी तरह से अनुभव किया है।

बहुत समय पहले, प्राचीन भारत में, संत शब्द का प्रयोग ईश्वर या ब्रह्म के बारे में बात करने के लिए किया जाता था। इस शब्द का प्रयोग बहुत लम्बे समय से होता आ रहा है. तिग्वेद नामक पुस्तक में कहा गया है कि संतों का वर्णन कई प्रकार से किया जा सकता है। श्रीमद्भगवदगीता नामक एक अन्य पुस्तक में बताया गया है कि सच्चे संत कैसे होते हैं।

"सद्भावे साधुभावे च सदित्येतत्प्रयुज्यते। प्रशस्ते कर्मणि तथा सच्छब्दः पार्थ युज्यते।। यज्ञे तपसि दाने च स्थितिः सदिति चोच्यते। कर्म चैव तदर्थीयं सदित्येवाभिधीयते।।

सद्भाव का अर्थ है मन की शांतिपूर्ण और प्रेमपूर्ण स्थिति रखना। लगातार लगे रहने का मतलब है हमेशा अच्छे काम करने पर ध्यान केंद्रित रखना। सभी शुभ कर्मों को संत कहा जाता है। ऐसा कहा जाता है कि जब हम दूसरों की मदद करना, प्रार्थना करना या दान देना जैसे काम करते हैं तो इससे सद्भाव पैदा होता है। इस सामंजस्य को ब्रह्मवाद भी कहा जाता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि जब हम ये काम करते हैं, तो हम खुद से भी बड़ी किसी चीज से जुड़े होते हैं। जो लोग इन अच्छे कार्यों को करने में सफल होते हैं वे ही सच्चे बुद्धिमान व्यक्ति माने जाते हैं।

गोस्वामी तुलसीदास, जो एक बुद्धिमान और आध्यात्मिक व्यक्ति थे, ने एक महत्वपूर्ण बात कही।

"विषय अलंपट सील गुनाकर। पर दुख–दुख सुख–सुख देखे पर।। सम अभूतरिपु विभद विरागी। लोभामरण हरष भय त्यागी।। कोमलचित्त दीन्ह पर दाया। मन बच क्रम मम भगति अमाया।। सबहि मानप्रद आपु अमानी। भरत प्रान बिरति बिनती मुदितायन।। सीतलता, सरलता मयत्री, द्विज पद प्रीति धर्म जनयत्री।। ए सब लच्छन बसहिं जासु उर। जानेहु तात संत संतत पफुरा।"

उन्हें कुछ चीजों की परवाह नहीं है. ये शांत रहते हैं और किसी पर गुस्सा नहीं दिखाते। उनमें चीजों को चाहने या चीजों में दिलचस्पी लेने जैसी प्रबल भावनाएँ नहीं होती हैं। वे डर से छुटकारा पाने की कोशिश करते हैं। इनका हृदय दयालु होता है और ये गरीब लोगों पर दया करते हैं। वे बदले में कुछ भी उम्मीद किए बिना ईश्वर की पूजा करते हैं और उसके बारे में सोचते हैं। वे दूसरों को तो सम्मान देते हैं लेकिन अपने लिए सम्मान की उम्मीद नहीं रखते। वे अपने लिए कुछ भी न चाहकर ईश्वर के बारे में सोचते हैं। सच्चा संत वही है जिसके हृदय में ये सभी गुण हों।

कबीरदास का मानना है कि वास्तव में अच्छा व्यक्ति संत के समान होता है। इस व्यक्ति के मन में दूसरों के प्रति कोई बुरी भावना नहीं होती है। वे उन चीजों से दूर रहते हैं जो उन्हें खशी तो देती हैं लेकिन महत्वपूर्ण नहीं हैं, और वे केवल भगवान से प्यार करते हैं।

"निरबैरी निहकाँमता, साँई सेती नेह। विषया सूँ न्यारा रहै, संतन का अँग एह।।"1

कबीर सोचते हैं कि जब एक अच्छा व्यक्ति कई ऐसे लोगों से घिरा होता है जो उन पर विश्वास नहीं करते या उन्हें नहीं समझते, तब भी वे अपने प्रति सच्चे रहते हैं। यह एक प्रकार से लकड़ी के टुकड़े के चारों ओर लिपटे हुए सांप की तरह है जिसकी गंध अच्छी होती है। साँप अभी भी वहाँ हो सकता है, लेकिन लकड़ी अपनी शीतलता नहीं खोती।

प्राचीन पुस्तकों और कहानियों में संत शब्द का प्रयोग दो अलग–अलग अर्थों में किया गया है। एक तरीका यह है कि किसी ऐसे व्यक्ति का वर्णन किया जाए जो बहुत अच्छा है और जिसमें सभी सर्वोत्तम गुण हैं। दूसरा तरीका है ईश्वर जैसे सर्वोच्च सत्ता के बारे में बात करना। हिन्दी साहित्य में संत शब्द मूलतः एक विशिष्ट प्रकार के काव्य से आया है। कवियों के लिए यह एक आम शब्द बन गया है। कुछ लोग सोचते हैं कि संत शब्द का प्रयोग केवल वास्तव में समर्पित लोगों के लिए ही किया जाना चाहिए। उनका मानना है कि विट्ठोल जैसे लोग, जो पंढरपुर में भगवान की पूजा करते थे, या वारकरी संप्रदाय के अनुयायी, सच्चे संत थे। नामदेव, ज्ञानेश्वर, एकनाथ और तुकाराम जैसे ये लोग महाराष्ट्र से थे।

संत शब्द का बहुत प्रयोग किया गया है और अब अलग–अलग लोगों के लिए इसका मतलब अलग–अलग है। हिंदी साहित्य में, इसका उपयोग उन लोगों का वर्णन करने के लिए किया जाता है जो निराकार भगवान की पूजा करते हैं। भक्त शब्द का प्रयोग उन लोगों के लिए किया जाता है जो किसी साकार भगवान की पूजा करते हैं। कभी–कभी लोग निराकार भगवान को संत और साकार भगवान को भक्त कहते हैं। आजकल जब हम निराकार ईश्वर साहित्य की बात करते हैं तो संत साहित्य की भी बात करते हैं। संत शब्द का अतीत में एक विशेष एवं गहरा अर्थ हुआ करता था। इसने भारतीय चिंतन से भिन्न विचारों को प्रतिबिंबित किया और समय के साथ अपनी अलग पहचान विकसित की। चूँकि एक शब्द से पूरे धर्म और उसकी मान्यताओं का वर्णन नहीं किया जा सकता, इसलिए कुछ लोग इसे निर्गुण पंथ कहते हैं और कुछ इसे निर्गुण धारा की ज्ञानाश्रयी शाखा कहते हैं।

डॉ. राजदेव सिंह बता रहे हैं संत शब्द के बारे में और हिंदी आलोचना में इसका अर्थ कैसे बदल गया है. उनका कहना है कि अतीत में इसे बहुत महत्वपूर्ण और आध्यात्मिक चीज के रूप में देखा जाता था। लेकिन अब, इसे अधिक संकीर्ण और केवल कुछ समुदायों से संबंधित माना जाता है। पूरे इतिहास में, इस शब्द का उपयोग अच्छे और धर्मनिष्ठ लोगों का वर्णन करने के लिए किया जाता रहा है। लेकिन अब, इसका उपयोग ज्यादातर कुछ धार्मिक हस्तियों जैसे देव, जयदेव, कबीर, रैदास, नानक और दादू के बारे में बात करने के लिए किया जाता है। हालाँकि, कुछ लोग आज भी तुलसी जी को उनकी मान्यताओं और प्रथाओं के कारण संत मानते हैं।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी हिंदी साहित्य में संत शब्द के बारे में बात कर रहे हैं. उनका कहना है कि अतीत में, संत शब्द का इस्तेमाल उन लोगों के लिए किया जाता था जो बिना किसी भौतिक रूप के भगवान के प्रति समर्पित थे। वे निर्गुण भक्त कहलाते थे और वारकरी संप्रदाय का हिस्सा थे। संत शब्द का प्रयोग कबीर जैसे कवियों के लिए भी किया जाता था जो बिना किसी भौतिक स्वरूप के ज्ञान के मार्ग पर

चलते थे। आजकल इस प्रकार के साहित्य का वर्णन करने के लिए निर्गुण और संत शब्दों का प्रयोग परस्पर किया जाता है। संत और भक्त दोनों सत्य में विश्वास करते हैं और उनका लक्ष्य ईश्वर से जुड़ना एक ही है।

तो, कुछ चीजें हैं जो किसी व्यक्ति को वास्तव में अच्छा बनाती हैं। ये चीजें हैं कि वे कैसे सोचते हैं, वे कैसे बात करते हैं और कैसे कार्य करते हैं। जो व्यक्ति अच्छा होता है वह सच्चाई भी जानता है और उन चीजों की ज्यादा परवाह नहीं करता है जो उन्हें थोड़े समय के लिए खुश कर देती हैं। केवल वही व्यक्ति संत कहा जा सकता है जो वास्तव में महान हो और जिसका हृदय अच्छा हो। भले ही उनके पास बहुत सी अच्छी चीजें हों, फिर भी उनकी अपनी विशेष मान्यताएं और काम करने के तरीके होते हैं। वे ऐसा इसलिए करते हैं क्योंकि वे एक निश्चित परंपरा का पालन करते हैं।

हिंदी की संत काव्य परंपरा एवं पमुख हिंदी संत कवि

संतों की परंपरा एक ऐसी चीज है जिसके बारे में विद्वान असहमत हैं। आचार्य परशुराम चतुर्वेदी नामक एक विद्वान ने उत्तर भारत के संतों के बारे में एक प्रसिद्ध पुस्तक लिखी। इस पुस्तक में कहा गया है कि कबीर पहले व्यक्ति हैं जिन्होंने संतों के बारे में लिखना शुरू किया। पुस्तक में उल्लिखित अन्य प्रारंभिक संतों में जयदेव, नामदेव, त्रिलोचन, साधना, वेनी और लालदेद शामिल हैं। तो कुछ लोगों का मानना है कि संतों की परंपरा जयदेव से शुरू हुई।

संत नामदेव और त्रिलोचन जयदेव संतों के बहुत करीब थे, लेकिन डॉ. पीतांबरदत्त बड़थ्वाल ने उन्हें संतों के करीब नहीं आने दिया। स्वीकृत होते हुए भी उन्हें परंपरा में स्थान नहीं दिया गया। महाराष्ट्र में वारकरी संत समर्पण भाव से भगवान के दोनों रूपों की पूजा करते थे। लेकिन साधना, वेणी और लालादेड जैसे अन्य संतों के बारे में इतनी जानकारी उपलब्ध नहीं है कि उनके बारे में कोई स्पष्ट राय बनाई जा सके। हमारे देश में कुछ लोग ब्राह्मणवाद और वर्णाश्रम के नियमों और मान्यताओं को अस्वीकार करते हैं। ईश्वर के भौतिक स्वरूप में विश्वास को अस्वीकार करना कोई नई बात नहीं है, लेकिन कबीर पहले व्यक्ति थे जिन्होंने खुलेआम ऐसा किया। ऐसा माना जाता है कि हिंदी में संतों की परंपरा संत कबीरदास से शुरू हुई, जिन्होंने बिना साकार रूप के ईश्वर में विश्वास को बढ़ावा दिया।

डॉ. राजदेव सिंह के अनुसार हिंदी की निर्गुण काव्य परंपरा की शुरुआत करने वाले कबीर ही हैं। वे न केवल इस परम्परा के, बल्कि हिन्दी भाषा के भी प्रथम कवि हैं। कई विद्वान इससे सहमत हैं और मानते हैं कि निर्गुण काव्य के आदि रचनाकार के रूप में कबीर को बिना किसी संदेह के मान्यता दी जानी चाहिए।

प्रमुख हिंदी संत कवि

कबीरदास

संत शिरोमणि कबीरदास के बारे में अधिक जानकारी उपलब्ध नहीं है क्योंकि उन्होंने अपने बारे में कुछ नहीं लिखा। उनके बारे में हमारे पास जो कहानियाँ और जानकारी हैं, वे उनके अनुयायियों और छात्रों द्वारा प्रसारित की गईं, जो उनसे प्यार करते थे और उनकी प्रशंसा करते थे। लोग इस बारे में अनिश्चित हैं कि

उनका जन्म वास्तव में कब हुआ था, लेकिन उनके जन्म के बारे में एक कहावत है जिसे बहुत से लोग मानते हैं।

'चौदह सौ पचपन साल गये, चंद्रवार एक ठाठ ठये।

जेठ सुदी बरसायत को, परनमासी तिथि प गट भये।।'

प्रसिद्ध कवि कबीर का जन्म वर्ष 1455 में ज्येष्ठ माह में हुआ था। उस दौरान सोमवार के दिन पूर्णिमा थी। श्साल गएश नामक परंपरा के आधार पर कुछ लोगों का मानना है कि कबीर का जन्म असल में साल 1456 में हुआ था। एक अन्य महत्वपूर्ण व्यक्ति आचार्य रामचन्द्र शुक्ल भी इस बात से सहमत हैं कि कबीर का जन्म वर्ष 1456 में हुआ था।

कबीर एक जुलाहा थे जो एक खास वर्ग के लोगों से आते थे। उन्होंने कई अलग–अलग तरीकों से सर्वश्रेष्ठ बुनकर बनने की कोशिश की। लोग उनसे कहते थे, आप एक विशेष समूह से हैं, जबकि मैं काशी नामक एक अलग जगह से हूं। हम एक जैसे नहीं हैं।ष आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी नाम के एक लेखक हैं जो सोचते हैं कि कबीर एक अलग समूह के थे जो बदल गए और मुस्लिम बन गए। लेकिन कबीर चाहे किसी भी समूह के हों, उनका काम कपड़ा बुनना ही था। कहा जाता है कि कबीर का जन्म एक हिंदू परिवार में हुआ था, लेकिन उनका पालन–पोषण एक मुस्लिम परिवार में हुआ। उनके पालक पिता का नाम नीरू और पालक माता का नाम नीमा था। कहानियों और कबीर के अनुयायियों के अनुसार उनका जन्म काशी नामक स्थान पर हुआ था।

कबीर एक बुनकर थे जो कपड़े बनाते थे। उन्होंने कई अलग–अलग तरीकों से सर्वश्रेष्ठ बुनकर बनने की कोशिश की। कुछ लोगों ने कहा कि वह ब्राह्मण था, जुलाहा नहीं। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी नामक एक अन्य व्यक्ति का विचार था कि कबीर की जाति को श्जुगीश कहा जाता है क्योंकि उन्होंने इस्लाम धर्म अपना लिया था। कबीर का काम कपड़ा बुनना था। भले ही उनका जन्म एक हिंदू के रूप में हुआ था, लेकिन उनका पालन–पोषण एक मुस्लिम परिवार में हुआ। उनके पालक पिता का नाम नीरू और पालक माता का नाम नीमा था। कथाओं के अनुसार कबीर का जन्म काशी में हुआ था।

कबीर ने निर्णय लिया कि स्वामी रामानन्द उनके गुरु होंगे। वे काशी नामक स्थान पर थे। रामानंद ने कबीर को सावधान रहने को कहा क्योंकि सूफी पफकीर शेख तकी नामक एक अन्य विद्वान भी उन्हें अपना गुरु मानते हैं। लेकिन शेख तकी ने इसके लिए जो कारण बताए हैं, वे तर्कसंगत लगते हैं।कबीर के अनुयायियों में बीजक नामक ग्रन्थ अत्यंत महत्वपूर्ण है। उनका मानना है कि यह सबसे पुरानी और विश्वसनीय किताब है। कहा जाता है कि कबीर के शिष्य धर्मदास ने इसे वर्ष 1521 में लिखकर समाप्त किया था। कबीर को ये शब्द याद थे। हालाँकि, इसकी कोई प्राचीन हस्तलिखित प्रति नहीं मिली है। कबीर साहब का उल्लेख सिखों के श्आदि ग्रंथश ग्रंथ में भी मिलता है। श्काशी नगरीश और श्कबीर गांठावलीश पुस्तकें कबीर की शिक्षाओं के अन्य संग्रह हैं। इन्हें पुरानी पांडुलिपियों का उपयोग करके बनाया गया था।

इन पुस्तकों में कुछ छंद और कहानियाँ आदि ग्रंथ पुस्तक के समान हैं। कबीर की रचनाओं को साखी, सबद और रमैनी नामक तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है।

सेन

कबीरपंथियों में बीजक नामक ग्रंथ अत्यंत विशिष्ट एवं पुराना है। उनका मानना है कि कबीर के शिष्य धर्मदास ने इसे बहुत पहले ही लिख कर खत्म कर दिया था। लेकिन हमारे पास पुस्तक की मूल हस्तलिखित प्रति नहीं है। कबीर का उल्लेख सिखों की एक अन्य पुस्तक श्आदि ग्रंथश में भी मिलता है। श्बीजकश में लगभग 225 पद्य और 250 कहानियाँ संकलित हैं। एक और पुस्तक है जिसका नाम श्कबीर गंथावलीश है जो पुरानी पांडुलिपियों का उपयोग करके बनाई गई थी और इसमें लगभग 50 कहानियां और 25 छंद हैं जो आदि ग्रंथ के समान हैं। बीजक में कबीर की रचनाओं को साखी, सबद और रमैनी नामक तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है।

पीपा

डॉ. पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल का मानना था कि उनका जीवन एक निश्चित कालखंड, संवत् 1410 से 1460.3 के बीच था। डॉ. त्रिलोकी नारायण दीक्षित ने बताया कि उनका जन्म संवत 1425.4 में हुआ था। सबसे पहले, डॉ. पीताम्बरदत्त देवी के अनुयायी थे और फिर उनकी मुलाकात कुछ वैष्णवों, विशेष रूप से स्वामी रामानंद से हुई, जिन्होंने उन्हें अपनी मान्यताओं से बहुत प्रभावित किया।

धन्ना

धन्ना जाट नामक एक विशेष समूह का व्यक्ति था। उनका जन्म वर्ष 1472 में राजस्थान नामक स्थान पर हुआ था। वह अन्य छात्रों कबीर, सेन और पीपा की तरह ही रामानंद नामक शिक्षक के छात्र थे।

1 साहित्य और विचारधारा; कमला प्रसाद।

2. साहित्य के समाजशास्त्र की भूमिका; मैनेजर पाण्डेय।

3. साहित्य का समाजशास्त्र; निर्मला जैन।

4. साहित्य और इतिहास दृष्टि; मैनेजर पाण्डेय।

5. मध्यकालीन बोध का स्वरूप; हजारी प्रसाद द्विवेदी।

6. उत्तर आधुनिक साहित्य विमर्श; सुधीश पचौरी।

7. संरचनावाद, उत्तर संरचनावाद एवं प्राच्य काव्यशास्त्र; गोपीचन्द नारंग।

8. साहित्य का समाजशास्त्र; डॉ. नागेंदर।

9. स्त्रीवादी साहित्य विमर्श; जगदीश्वर चुतर्वेदी; लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।

10. स्त्रीवादी विमर्शः समाज और साहित्य; क्षमा शर्मा; राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।